OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 9

नरसिंगपुर-म.प्र.। किसान सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक जालम सिंह पटेल, मंडी अध्यक्ष रविन्द्र पटेल, ब्र.कु. सुमंत, ब्र.कु. विष्णु, ब्र.कु. कुसुम व ब्र.कु. गीता।

सादुल शहर-घड़साना(राज.)। राजयोग शिविर का शुभारंभ करते हुए पूर्व विधायक पवन दुग्गल, पूर्व व्यापार मंडल अध्यक्ष चन्द्रभान लेघा, सरपंच कान्ता मिद्ढ़ा, पंचायत समिति विकास अधिकारी अमित जैन, ब्र.कु. माधवी, ब्र.कु. सुषमा तथा अन्य।

सोनई-महा.। विधायक शंकर राव गडक पाटिल को उनके जन्मदिवस पर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा।

शांतिवन-आबू रोड। सेन्ट्रल ट्रेनिंग कॉलेज,महाराष्ट्र से आए सहायक कमाण्डेंट ट्रेनीज़,के.री.पु.बल, को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी कमाण्डेंट पुष्कर भारद्वाज, ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. भूपाल,शांतिवन प्रबंधक, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

दिल्ली-पालम पुरी। संसद सदस्य परवेश वर्मा को मुबारकबाद देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुदेश। साथ हैं सुरेन्द्र मटियाला,सह संयोजक,ओ.बी.सी. प्रकोष्ठ,दिल्ली,भाजपा प्रदेश।

वर्तमान में भी वही महाभारत काल चल रहा है।

दूसरी एक पारीवारिक स्थिति में कौरव और पांडव एक ही परिवार के सदस्य थे। आज की दुनिया में भी यह देखा जाता है कि दिन-प्रतिदिन परिवार टूटते जा रहे हैं। छोटे-छोटे परिवार होने लगे हैं। पहले जिस तरीके से संयुक्त परिवार में रहते थे, आज उनमें इकट्ठा रहने की शक्ति नहीं है। परिवार में माता-पिता जिनके मोह के कारण ज्ञान चक्षु बंद हो जाते हैं। धर्म तथा ज्ञानार्जन करने वाले लोगों को पाँच गाँव तो छोड़ो सुई की नोंक के बराबर भी जगह देने को तैयार नहीं होते हैं। भावार्थ यह है कि न वे अपने मन में स्थान देना चाहते हैं और न ही उसको सुख से रहने देना चाहते हैं। अभिमान तो इतना है कि चाहे कुल का नाश हो जाए तो भी घृणा, द्वेष, क्रोध, अन्याय, प्रतिशोध की भावना को वे छोड़ना नहीं चाहते हैं। इस तरह पारिवारिक समस्यायें सिर्फ उस समय (महाभारत के समय) थीं ऐसा नहीं है। वर्तमान में भी वही महाभारत काल चल रहा है। इस समय में भी हर परिवार के अंदर किसी न किसी रूप से ये समस्या आती ही रहती है। इसलिए ऐसी समस्याओं को हल करने के लिए जिस समाधान की आवश्यकता है, वह भी श्रीमद्भगवद्गीता से मिलती है। यह वही महाभारत का समय है, ऐसा हम क्यों कहते हैं? क्योंकि जैसे महाभारत के अन्तिम अध्याय में ये बात लिखी गई है कि जब घर-घर में महाभारत होगा तब समझना की महाभारत काल पुन: आ गया है। आज हर घर में यही महाभारत वाली स्थिति है जहाँ भाई-भाई, पिता-पुत्र इकट्ठा नहीं रह सकते, इस तरह से परिवार टूटने लगते हैं। मोह के कारण, जब इंसान के ज्ञान चक्षु-बंद हो जाते हैं तब वो समझ नहीं पाता है कि उसको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? क्या सही है और क्या गलत है? वह भी समझ में नहीं आता है।

तीसरा, जैसा कहा गया है कि यह एक सामाजिक स्थिति का समाधान भी है। आज के समाज में भी अगर देखा जाए तो शकुनी जैसे पात्र देखने का मिलते हैं।

महाभारत के समय तो शायद एक ही शकुनी था परंतु आज के समाज में तो कितने शकुनी हो गए हैं, हर मोड़ पर एक शकुनी बैठा है। जो कई परिवारों के बीच फूट डालता रहता है। समाज में शकुनी जैसे पात्र, अर्थात् विकर्म तथा कुकर्म के प्रति अंधा समाज जो धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, भलाई-बुराई, न्याय-अन्याय को परखने वाले चक्षु नहीं रखते हैं। कई बार ऐसे शकुनी का साथ देने के लिए भी लोग चल पड़ते हैं या आगे बढ़ जाते हैं। कई बार सामाजिक परिस्थितियाँ भी हमारे सामने इस प्रकार से आ जाती हैं कि हमें समझ में ही नहीं आता कि इसे पार कैसे किया जाए? ऐसी सामाजिक परिस्थिति का समाधान भी श्रीमद्भगवद्गीता में मिलता है। साथ ही साथ जैसा कहा गया है कि इसमें हमें एक राष्ट्रीय स्थिति का समाधान भी प्राप्त होता है। धृतराष्ट्र का विवरण इस प्रकार है कि धृतराष्ट्र अर्थात् जो राष्ट्र को धृत भावना से हड़प कर बैठा है, पाश्विक बल से अपना अधिकार जमाए हुए है, जो सत्य की दृष्टि से अंधा है और जहाँ विशेषकर मानसिक और आत्मिक अंधत्व होता है वह बहुत ही भयानक है। आज राष्ट्र में भी यही मानसिक और आत्मिक-अंधत्व प्रकट होता जा रहा है। जब इस तरह की स्थिति आ जाती है, तब परमात्मा को आकर के इसका समाधान देना पड़ता है। इसी तरह आज संसार ऐसी विशेष संकटमय स्थिति से गुज़र रहा है, जब स्वयं भगवान इस धरा पर आकर इसके इतिहास को एक नया मोड़ देते हैं, फिर से ज्ञान देते हैं और मन को विषय तथा व्यक्तियों के मोह से निकालकर, योगयुक्त बनने की प्रेरणा देते हैं। -क्रमश:

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

भीतर के कुसंग से खुद को बचाएं

कुसंग से बड़े-बड़ों का पतन हो गया है। बर्बाद होने वाले लोगों की संगत को बारीकी से देखिएगा। पाएंगे कि जिन लोगों के साथ वे उठते-बैठते थे वे ही उनके पतन का कारण बने। मनुष्य का भविष्य उसकी संगत पर आधारित है। जो लोग आपको अच्छे लगते हों, पर यदि उनके साथ आपको कुसंग की बदबू आती हो तो तुरंत दूरी बना लें। आज सार्वजनिक जीवन में हमें अनेक लोगों से मिलना-जुलना पड़ता है। काम्काज में कई लोगों के साथ लंबा वक्त भी बिताना होता है। कुछ लोगों की बातों से हमें लगाव जाग जाता है। वे खराब होते हुए भी हमें प्रभावित करते हैं। मन को गंदी और गलत बातें पसंद हैं, इसलिए वह कुसंग की ओर तुरंत लुढ़कता है। कुसंग का मतलब केवल आचरणहीन व्यक्तियों के साथ रहना ही नहीं है, नकारात्मक विचार वालों से भी दूरी बनाए रखें। जो लोग उदास हों, ज़िंदगी के यथार्थ से मुह मोड़कर शुतुरमुर्ग की तरह गर्दन गाड़ चुके हों तो उनसे सावधान हो जाएं। हमेशा ऐसे लोगों का संग करें जिन्होंने जीवन के रोमांच को बनाए रखा है। जो जीवन के प्रति अत्यधिक आशान्वित रहते हों। जिनकी बातचीत में ही हिम्मत झलकती हो, लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं हो जाता। आप बाहर से अच्छी संगत तब ही रख पाएंगे, जब आप भीतर से मन को कुसंग से बचाएंगे। हमारे मन को कुसंग करने के लिए बाहरी लोगों की ज़रूरत नहीं पड़ती। वह भीतर ही भीतर घोर कुसंग का संसार बनाने में समर्थ है। तो पहले खुद को भीतर बचाएं, फिर बाहर की तैयारी करें।

मनुष्य खुद...**पेज 1 का शेष...** श्रेष्ठ कर्म से दुवाओं के साथ धन तो अपने आप ही आता रहेगा। एक उदाहरण देकर कहा कि मान लो एक फल वाला फल बेच रहा है। आज उसके पास ठीक फल नहीं हैं, कोई ग्राहक आता है तो वह कहता है कि आज मेरे पास ठीक फल नहीं है, आप दूसरे फल वाले से फल ले लो। देखने में आता है कि आज उसका नुकसान हो रहा है लेकिन वह ग्राहक का फायदा सोचता है खुद का नहीं। ग्राहक कितना खुश होता है और उसकी इमानदारी की बात पांच लोगों को सुनाता है। वही ग्राहक फिर दूसरी बार फल लेने किसके पास जाएगा? तो साथ में और पांच लोग भी उसी दुकानदार के पास फल लेने जाएंगे, तो इस रीति से उसके पास धन भी आया और दुवाएं भी आईं।

व्यावहारिक - **पेज 1 का शेष...** की ज़रूरत है। ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष,शिक्षा प्रभाग ने कहा कि विश्वविद्यालयों के सामूहिक प्रयासों से मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर हर संभव बल दिया जाना आवश्यक है। ज्ञान वही श्रेष्ठ होता है जो हमारे चरित्र को श्रेष्ठ बनाता है व जीवन को दिव्य बनाता है। डॉ. हरीश शुक्ला,राष्ट्रीय संयोजक,शिक्षा प्रभाग ने कहा कि ईश्वर के सत्य ज्ञान में ही शक्ति है। राजयोग के ज़रिए ज्ञान को आचरण में लाने पर जीवन में प्रेम, शांति, सहयोग, ईमानदारी, सम्मान, करुणा, दया, सत्यता, विनम्रता, सहनशीलता, निर्भयता और साहस आदि विभिन्न मूल्यों का समावेश होता है। अध्यात्म को किसी भी सूरत में नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए।

ब्र.कु. शीलू,मुख्यालय संयोजक ने राजयोग का अभ्यास कराते हुए सभास्थल में बैठे सहभागियों को शांति की गहन अनुभूति कराई।

डॉ. आर.पी. गुप्ता,मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण संयोजक तथा ब्र.कु. सुमन ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

उन्होंने आगे कहा कि अगर कोई व्यक्ति हमसे गलत व्यवहार करता है लेकिन यदि फिर भी हमारा सर्व के साथ व्यवहार अच्छा ही रहे तो हमारी दुवाओं का खाता हमेशा भरपूर रहेगा और जहां दुवाएं साथ होती हैं तो कोई भी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक भरत पटेल, मेयर सोनल सोलंकी तथा शुगर फैक्ट्री एवं वलसाड जिला सरकारी बैंक के चेयरमैन अरविंद पटेल ने किया।

ब्र.कु. रंजन ने ब्र.कु. शिवानी तथा कार्यक्रम में आए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। ब्र.कु. रोहित ने विद्यालय का परिचय देते हुए कहा कि करीब 140 देशों में 9000 सेवाकेन्द्रों के माध्यम से बहनों द्वारा संचालित यही एकमात्र संस्थान है।